International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

धारचूला मुनस्यारी कनार क्षेत्र के कोकिला माता झोड़ा (लोक संगीत) का ऐतिहासिक महत्व

देवेन्द्र सिंह धामी[1], प्रो. वी.डी.एस. नेगी[2]

[1]इतिहास विभाग एवं पुरात्तव विभाग, सोबन सिंह जीना परिसर अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

[2]विभागाध्यक्ष, इतिहास, पुरात्तव एवं संस्कृति विभाग, सोबन सिंह जीना परिसर अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

सार

उत्तराखंड के सीमांत जिले पिथौरागढ़ में दो विकासखंड धारचूला एवं मुनस्यारी है यह क्षेत्र काफी मनमोहक है। यहां प्राचीन समय से ही तीर्थ यात्राएं होती रही हैं इसमें नंदा राजजात यात्रा हो या कैलाश मानसरोवर यात्रा ये इसी क्षेत्र के अव्यव है, और इस क्षेत्र के लोगों का हमेशा से ही इन यात्राओं को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भागीदारी रहती है यहां हर वर्ष कोई ना कोई यात्रा अपश्य होती रहती है जैसे नंदा देवी यात्रा, छिपला केदार यात्रा, विश्वप्रसिद्ध आदिकैलाशयात्रा, जिया कनार की भगवती कोकिल माता की यात्रा, इसमें अवश्य ही इन यात्राओं को यदि हिमालयी महाकुंभ का दर्जा दिया जा तो अतिशयोक्ति नही होगी। इस परिपेक्ष में वर्तमान में सरकारों द्वारा पर्यटन, रोजगार, संस्कृति संरक्षण करने हेतु पहल भी अवश्य की जा रही है। उत्तराखंड को देवभूमि के नाम से जाना जाता है जहां कोने–कोने में भगवान वास और दिव्य शक्तियां विराजमान हैं। वैसे ही यह क्षेत्र भी इन यात्राओं के परिपेक्ष से अछूता नहीं है यहां भी जगह–जगह धार्मिक स्थल मौजूद हैं, और उन्हें धार्मिक स्थलों से जुड़े हुए कुछ लोकजाथये, जनश्रुतियॉ, पारंपरिक लोकगीत जो यहां के प्राचीन पुरास्थलों, मंदिरों, की मान्यता लोक विश्वास को आज भी परस्पर बनाए हुए है। यहां की प्राचीन लोक जीवन, रहन–सहन खान–पान की दैवगीत, दैवकथा इस क्षेत्र को अन्य क्षेत्र से सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप अलग बनाती है। इसी लोककथा/लोकगीत में से एक झोड़ा गीत/कथा हैं। जो कोकिल माता किस तरह से पाली पछाव काली कुमाऊ में पैदा होकर कोडी कैलाश तक जाने की कथा फिर वहां से वापस आकर कनार में स्थापित होने की ऐतिहासिक कथा आज भी इस क्षेत्र जीवित उद्हारण है।

कोकिला माता कनार झोड़ा (लोक संगीत) गायन का भौगोलिक क्षेत्र–

धारचूला मुनस्यारी उत्तराखंड के सीमांत जिला पिथौरागढ़ में आता है यहां वर्ष भर मौसम अत्यधिक शुष्क रहता है धारचूला मुनस्यारी तीन देशों की सीमाओं से घिरा हुआ क्षेत्र है जहां बड़े–बड़े पर्वत चोटियां और बड़ी–बड़ी नदियां बहती हैं भारत और नेपाल को अलग करने वाली काली नदी का उद्गम स्थान भी यही धारचूला काला पानी नामक जगह पर है जहां से प्राचीन समय में तिब्बत और चीन व्यापार होता था इसी रास्ते से कैलाश मानसरोवर की यात्रा की जाती है यह क्षेत्र सुदूर में होने के कारण यहां की एक अलग संस्कृति है भाषा के साथ–साथ संस्कृत में भी काफी भिन्नता देखने को मिलती है धारचूला में जहां रं समाज की मेंसंस्कृति भिन्नता है वही काली और गोरी नदी के निकट निवास करने वाले अनुवाल समुदाय और अनुसूचित जनजाति के लोगों का पहनावा संस्कृति खान–पान में भिन्नता है जोहर क्षेत्र में रहने वाले शोका का जिनका खान–पान रहन–सहन सब अलग है वही एक छोटे से क्षेत्र में रहने वाले राजी जनजाति जिन्हें बनरोत के नाम से जाना जाता है उनकी संस्कृति अलग है। इन सभी सामाजिक प्रवेश के एक सूत्र में बॉधे होने का प्रमुख साधन यहॉ के स्थानीय देवी देवता ही हैं जिनके लोकगीत हर समाज का हिस्सा है। इसमें प्रमुख **कनार क्षेत्र के कोकिला माता झोड़ा (लोक संगीत)** भी एक है। जो इसी भौगोलिक क्षेत्र के अन्तर्गत कनार गॉव के बीच स्थित जिसकी ऊॅचाई समुद्र तल से 2000मीटर पर आधुनिक तकनीकी से बना है।

उद्देश्य

1. लोकगीतों में वर्णित इतिहास को ऐतिहासिक साक्ष के साथ परीक्षण करते हुए प्रकाश में लाना जिससे इस क्षेत्र के अपरूक्षेय माने जाने वाले इन लोकगीतों को पीढ़ी दर पीढ़ी पहुचाना।
2. लोक संस्कृति के साथ लोक इतिहास को एक नया आयाम दिया जा सके जिससे भावी पीढ़ी को अपनी संस्कृति समझने का अवसर प्रदान करना।
3. इस देवभूमि की लोक संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु प्रयास कर साक्षात्कार के माध्यम से क्षेत्रीय जन मानस तक पहुचाना। एवं पूरे विश्वपटल पर इस क्षेत्र की संस्कृति को पहुचाना जिससे पर्यटन एवं रोजगार के साधनो का विस्तार कराना

विधि तंत्र

झोड़ी द्वारा गाए जाने वाले झोड़ा का दस्तावेजीकरण करना तथा उसमे वर्णित सामग्री का अनुवाद करना इस हेतु लोक गायको द्वारा गाए जाने वाले झोड़ों में सहभागी अवलोकन तथा डिजिटल माध्यम से रिकॉर्ड किया जाना ऑडियो वीडियो रिकॉर्ड किया गया है इसका भाषा अनुवाद करने हेतु लोक गायको के साथ–साथ अन्य सामाजिक वरिष्ठ नागरिकों व संबंधित विशेषज्ञों का साक्षात्कार लिया गया है, यह शोध सामग्री लिखित रूप से प्राप्त नहीं है तथा इसके लेखन में प्राथमिक स्रोतों का अध्ययन किया गया है जिसकी मान्यताएं क्षेत्र विशेष में अलग–अलग हो सकती है परन्तु लोक देवी देवता एक रूप में ही विख्यात है। जिसे साक्षात्कार, का विश्लेषण कर प्राथमिक शोध के रूप में संकलित कर प्रस्तुत करने का पूर्ण प्रयास किया गया है।

कनार कोकिला माता झोड़ा (लोक संगीत)का ऐतिहासिक महत्व

किसी भी झोड़े को प्रारंभ करने से पहले सभी देवताओं की जय जयकार की जाती है, तब जाकर किसी भी देवी देवता का झोड़ा प्रारंभ किया जाता है, यह झोड़े एक प्रकार से उन देवी देवताओं की कथा होती है, जिसे एक संगीत रूप में में गया जाता है, जिसे धारचूला मुनस्यारी में पुरुष वर्ग के लोग ही गाते हैं। इसमें मुख्यतः छिपला केदार का झोड़ा, मां कोकिला का झोड़ा, (जो आपस में भाई–बहन हैं) छिपला केदार के पुत्र हुष्कर और (हुष्कर के पुत्र अर्थात छिपला केदार के नाती तथा कनार कोकिला माता के नाती) सुष्कर एवं नंदा देवी महाकाली, कालछीन देवता, हरदौल नरदौल के झोड़े मुख्य रूप से गाए जाते हैं। इन्हीं में से एक कथा मां कोकिला देवी का है, कैसे वह अपने घर को छोड़कर कहीं दूर जंगल में कोढ़ी कैलाश नामक जगह पर विराजमान हो जाते हैं और 12 वर्ष के बाद उनको एक दिन ख्याल आता है कि आज तक मेरे घर से मुझे कोई ढूंढने नहीं आया मेरे भाई लोग थे और मेरा सबसे छोटा भाई देव मंगल जो मुझसे इतना प्रेम करता था वह भी मेरे खोज में नहीं आया तो देव मंगल उस समय तक नाजरी कोट के राजा बन चुके होते हैं और उन्हें केदार के नाम से जाना जाने लगता है तो उसी रात केदार जी को सपना आता है और सपने में अपनी बहन को देखते हैं, तो उसके बाद वह अपने बेटे को अपनी बहन को लाने के लिए भेजते हैं, तो इसी को झोड़े के रूप में इस तरह से व्यक्त किया गया है

सर्वप्रथम कोकिला देवी की जन्म कथा

के जागे जन्म भय के जागे रजा थान लिया। काली कुमाऊ पाली पछाऊ जन्म भअ।
के कोखी उपज्या के जांग जनम्या। कोडिया नाग जांग जनम्या मैना माई कोखी उपज्या।
काली कुमाऊ पाली पछाऊ जन्म भय छ। कैलाश गोक्की पाठ राज रसाई।
कन्या जन्म भई कन्या जवान भई। कन्या गोर गवाल भय।
देबलोक वार मां पंचनाम देवी देवता न क। गाय भेषि गोचर नेह गयिन।
बाली कन्या कोकिला बोलि बोलि झे छ। बनाया माई बापू खान पीन बनाया।
सब लोगनक गैं भैंस गोचर न ग्येन। हमर गैं भैंस हिल घास दूप ग्येन।
मैना माई ले खान पिन बनाई। कांसा थाल मा ज्यूनार पशकी।
बाल कन्या खा पी है ग्ये। हाथ बोल थो होम डगार कुल्लू पिच्के।
खोला ऋखोला ईज माई हमार सोल से गैं भैंसी खोला। ईज माई गाय भैंसी खोल।
बाली कन्या गाय भैंसी हाकी डाकी गोचर भूमि पुजिझे।
12 बीसी ग्वाल लोग चोखनी ढुंगी मां सभा बसीरीन।
खाजा खचुड़ा 12 बीसी गवालः बाटी खाई। बाल कन्या घुन मून बोलन भेग्ये।
आजक खेल ग्वाल भयो कि खेल खेली जाल।
बाल कन्या 12 बीसी ग्वाल नक राज बनीगी।
जो खेल तुमि कोला ते खेल खेलुल। 12बीसी ग्वालन मा हुकुम लागिन्न।
आजक खेल ग्वाल भयू गिनवा खेलूल। बाल कन्या गिनवा खेलल।
के के हाथ तोडी दी छ के के खुट तोडी दी छ। 12 बीसी ग्वाली परेशान है जानन।
घाम बूढ़ी गै 12 बीसी ग्वाल सोलसे गाय। भैंस हाकाल डकाल घर बाट लागिग्येंन।
बाल कन्या डोली मा बस गोलाली मैना ग्वास चलो।
कबे ग्वालन क हाथ तोडी कबे ग्वालन क खुट तोडी।
बाल कन्या बोली ऋबोली घर घात क्वेला ग्वालो तमार जी मार दियूल।
घर कुढ़ करेल तक म्यार डोली बोकला। भोल वन अन वकत म्यर डोली बोक्की लालहा।
होते कहते 2 चार दिन कोण मैन दिन हेंगे। 12 बीसी ग्वालन भौत प्रेशान हेंगे।
ग्वाल हार क झोंक हेग्येन माछ कान रेगयेन। एक दिन ग्वाल न क मातृ बाप ने ले ग्वाल ने पुछिन।

खान खान पिन पिन ग्वाल मुनानो तुम्ही की हेर छः।
12 बीसी ग्वाल कोनन बतोना हामी बते दी छी लेकिन हमर जी मार दियल।
कोड़ी नाग च्येल बाल कन्या हमाने सतोन सते राखी।
हमीन में राज बनीरो दिन भर हमीने ढुंग सरो चोर चीनो।
घर ऑन बखत डोली मा बस हामी डोली बोकन पड़।
घर घात कोला जी मार दियूल को। हमने ह्यू परेशानी छः।
ग्वालन मात्री बाप तत्की बात इति परेशानी हेरा तिम। भोल वन जान बखत डोल झन बोक्या।
सोलसे गोर भैस डाकवेर वन जाया। झल परी के खान दिन खॉ चुटी होगयेन सुकाल होगयेन।
ब्याल भोल ब्या भोल भोल बियागे। 12 बीसी ग्वाल मुनान खां चूट्टी सोलसे गाय भैंसी खोल।
वे हाकन डाकन गौचर भूमि नेहेग्यें। बाल कन्या डोली छारी देयन।
ग्वाल न क माई बाप 12 बीसी ग्वालेन ह सिकोन भेग्येन।
बाल कन्या डोल छाड दिया। बाल कन्या खा पी गै भैंस हाकन डाकन गोचर नेह गई।
बाल कन्या रीश रिष्यया गई। आज मेयर डोल छारीबेट अगले के आया।
12 बीसी ग्वाल कोन भकिन ततोर चड्याल।
भड़आयल बिगर नोक बिगर गोक हमीन मां राज बनीरे।
बाल कन्या रो धान लगीग गाय भैंस छड़ीवे घर आगेय।
बाली कन्या कौन लगी मैं बाबू म्यार नाम कि छः। मैत्री बाप कोनीन त्यर नाम के नाछ।
तोहे हमिल बाली कन्या कयू। बाल कन्या जवान हुएके 12 बीसी ग्वालन।
मैया बाप कोडीया नाग पास नेहेगिन। राजा कोडीया नाग तेरा कन्या हमार गोलन मां रावण बनी छी।
हमार ग्वाल मुंनान है बहुत परेशान के कित त्यर कन्या व्यवेदी। की तो ग्वाल झन लगो।
तदी हुन हुन घाम बूढ़ी ग्येछ। झल पढ़ीगै छः खेह चूटी पंच नाम।
देवी देवता कोडिया नाग मैना माई बाल कन्या सुकाल हैगइन।
कन्या विवोन हेगई कन्या जवान हेगई। क्वे ठुल खानदान क क्वै राजा भल।
वर भल घर क्वै ओछेत दी छेत। बाल कन्या कान सुन लगीछः।
म्यार मात्रेर बाप मेहे ब्योनेक सोचनीय। बरियात करण भेटी मी भाजी बे नेह जान।
मर्द मुख डीट नी पडन चाई मीं अब्योयूं कन्या रोल। तब बाली कन्या मध्य रात मां विओजी ठार हेंगे।
बाली कन्या बगत बुलान भै गै। हिट बाबा सवार हामी भेज बे जानू।
दूध पीनी धुरी हाथ में समायी सवरा छोरी। कालीका दगड़ा लीजो वेट भाजिंगे।
हीटन रिटन नदी किनार नेहगे। तब बाली कन्या मन मा सोचन भेग्य।
यो गारक किनार मैं कसकी रोल बालकन्या बयाली रथ उड़न भौगे।
उड़ते–उड़ते होली अर्थात हवा मण्डल, बादल मंडल, सूर्य मंडल तारा मंडल।
काली खपड़ा खण्ड पुजीगे अब मलीके क्वें भोत न धाट ना।
आप कै राज जौल बाल कन्या बयाली रथ उड़ीबेट कैलाशक बाट लागीगे।
बाल कन्या लिंटन–रिटन कैलाश मॉ पुचीग्यें।
दूध पीनी छोडी पकड़वे कैलाश पर्वत मा गुफा बनायी गे।
संवरा छोरी रवराज में राखीगे, काली कवा सीलिंग पेड में राखीगे।
क्वें आनी–जानी देखने कॉ–कॉ कें बासे सवर छोरी तै।
क्वे ओनी–जानी क्वे मर्द आल जब म्यर गुस्येंम झन आने दिये।
कैलाश गोकी पाछ पियुर महल सपुर धोल्यार घर तली।
स्यर् घर मली भ्यर् ताम तपानी, बाट खोवनी हामी हरला।
घोडा तबेला, गाड घटोली, लेक भैसोंली ज्वाल धार पानीक चक्का बनायी।
तब राज पाठ चलायी। एक दिन, कौन द्वी दिन लगेन द्वी दिन कौना मैन दिन लेगेन।
एक वर्ष हेगे, एकवर्ष कौन 12 वर्ष हेगेन।
राज पाठ चालाई घाम डुबीगेछ झल परीगे खा चुटी बाली कन्या सुकाल हेगे।
क्वाली कुमांऊॅ बेटी देवमंगल (केदारनाथ) नाजूरीकोट राज पाठ बनायी ग्येन।
तती हुन–हुन घाम गेछ बुढी झल पीड़ी गेछ सगली परिवार खा चुटी सुकाल हेग्येन।
बुढ़ केदार घोड़ी–घोड़ी नीन रोछ बुढ़ केदार हे स्वीन हेरं।

स्वीन में बाल कन्या देखी बाल कन्या रावे धान लागीर।
बाल कन्या तथली बार बाल कन्या घुन–मुन बुलान नाम छन।
भवाते मी भाजते आयु क्वैर कैलाश गोकी पाठ छः।
12 वर्ष हग्येन क्वै म्यर मौतीन आनू नैछः जान् नैछः अभागी रंडोली भयू।
गोकी पाठ रयू म्यर मात्री–बाप हुन, भाभी–भौज हुन, क्वै माती–गोती हुनत च्यार हुत्याल ओन।
12 वर्ष हेग्येन म्यार लिहाल क्वै त्यार न व्यार न ऋतु न मास।
मै क्वें मात बुलाल कैवेक स्वीन चान लारेहः।
तब बुढ़ केदार क स्वीन हेरे बुढ़ केदार नीन खुलग्ये।
व्या भोल–व्या भोल, भोल वियागोछः उडीच–सुरीछ झुली भागे।
चखुनी मनामां घामिल झुली आयी खानी कसी धार बुढ़ज्यू।
केदार बीच ठार हेग्यान अफन पैरोनीक वेरी–पेरी हेग्ये।
बुढ़ज्यू केदार मुखक मनुर गाल दुबल हेगानि।
सात रानी स्वामी–2 कौननः मुख मनुर गात दुबल क्या लीहैल हेराः कि दुखः हेग्यो तल।
बुज्यूल केदार कौनान म्यार पीठी बैन छीः बाल कन्यी हड़ का नांगी पेट भुख देख्यू।
रवै घान लागीरे 12 वर्ष हवेगीन यी गोकी पाठ मा इनु म्यर सौथ सुथ्याल हुन भभागी रंडोला भयू।
क्वै अन्–नै जान् नै, क्वै माती ग्वुती हेवेला, म्यर सुत्याल आया।
स्वीन मॉ बतारेह ते लिहाल मैते दुःख हैरेह झरूक ठोर उठी ग्यैन।
हिटन रिटन सभागी चोरन नैहडीन 20 बैक 9 पूत सभा में बैठी ग्यैन।
तब बुढ़ केदार कौ अरे कजरी लोगो व्यलक रात स्वीन हेरः स्वीन मा देख्यू।
म्यर पीठक बैन बालकन्या कैलाश गोकी पाठ छः क्वै म्यर माती गोती हवोल म्यर सुत्याल आया।
आप कौ जाल कौर कैलाश म्यर बैनीक सुत्याल बुढ़ केदार कौ जा बाबा काक बॉस भड़।
काकीरौल देवा कोरी कैलाश तुमार बुज्यू हुत्याल काका बॉस भड़ काकीरौल देवा।
बटीन भेग्येन खान–पीन खैबेंट तैयार हेग्सेन भगुवा बैरी–पैरी तैयार हैगीन।
तब बुढ़ केदार ले बैनीक लिहाल 12 वर्ष 12 अगीय 12 घघीया।
जड़ जेवर पॉव से सर् तक जेवड़ बटियां।
काक बास भड़ काकी रौल देवा लाट लागीग्येन तबै।
हिटन–हिटन नाजरीकोट, लोडीलडाना, जुम्मा खेला, सांकुरी गर्ग, जंगर ह्याकी,
बुढ़ाघर, थीया गांव, नीरफनी धार, कोडी कैलाश, गोगी पाट,।
अर्थात कोकिल माता का निवास स्थान कोडी कैलाश, तकलाकोट, तीनधुर बाजार, कुंगड़ी, बिंगड़ी, रांगवा, उड़ार, मिनसिनिया धुर, (हरदौल देवता) रूपसी बगड़, जैम घाट, भदेली कालू, पैराड मदकोट, देवी बगड़, चमरार धार, बाता उमड़ना, जड़ी गॉन, सेराघाट, सेरा खरतोली, सीतापनी, भेसाखड़क, साभम्याल, दोपाट, सानभनार, देवलपाट, खड़र चूली, धोल धापर, लोटिल डाना, नजरीकोट, कनार, स्थान पर कोकिल माता ने अपना निवास स्थान बनाया और वर्तमान में इस झोडा को क्षेत्रीय भाषा में लितिवद्ध किया गया है।

अनुवाद सारांश रूप में

सर्वप्रथम कोकिला देवी का जन्म स्थान की कथा काली कुमाऊं पाली–पछाऊ जो काली नदी के पश्चिम ओर अल्मोड़ा जिले के द्वाराहाट क्षेत्र में उनका जन्म हुआ। कोडिया नाग और मैना माई के घर में कन्या जवान हुई 12 वर्ष की कन्या गाय बैलों को चराने जंगल जाने लगी 12 बीसी (240)ग्वाले के साथ जंगल जाने लगी और वहां उनके साथ खेल खेलने लगी खेल में वह राजा का किरदार निभाने लगी और सभी पर राज करने लगी घर आते समय उसे डोली में बिठाकर ले आते और जाते समय भी उसे डोली में ले जाते, इस तरह कई दिन बीतने लग गए और ग्वालो के साथ मारपीट करके उनको परेशान करने लगी हैं। औंर उनको यह कह दिया कि अगर घर में शिकायत किया तो कल उससे बड़ी सजा मिलेगी इसलिए किसी ग्वाले द्वारा उनकी शिकायत घर में नहीं की गई, इस तरीके से ग्वाले कमजोर होने लगे जब एक दिन ग्वालो के घर वालों ने पूछा तुम खाना तो खा रहे हो, तो इतना कमजोर कैसे हो रहे हो तब उनके बार–बार पूछने पर उन्होंने बताया कि कैसे उनको परेशान किया जाता हैं। और उनसे सारा काम करवाया जाता हैं। तब पूरे गांव वाले शिकायत लेकर घर पहुंच जाते हैं। तो उसी रात दोनों पति–पत्नी बात करते हैं। कि अब हमारी कन्या बड़ी हो गई हैं। इसका विवाह कर देना चाहिए यह बात कोकिल माता सुन लेती हैं। और वह अपने एक नौकरानी को लेकर घर से भाग जाती हैं। भागते–भागते वह नदी किनारे किनारे कोडी कैलाश पहुंच जाती हैं। गोगी पाठ नामक जगह पर निवास करने लगते हैं। कहती हैं, कि मुझे किसी पुरुष का चेहरा नहीं देखना हैं। और विवाह नहीं करना है वह अपनी नौकरानी को कहती हैं कि किसी को भी यहां प्रवेश मत करने देना कुछ समय भी जाता हैं।ऐसे ही 12 वर्ष भी जाते हैं तब एक दिन वह सोचती हैं। कि आज तक कोई मुझे ढूंढने नहीं

आया मेरे घर से कोई भी मुझे ढूंढने नहीं आया मेरा सबसे छोटा भाई मंगल देव जो मुझसे इतना प्रेम करते थे वह भी मुझे ढूंढने नहीं आए तो उसी रात देव मंगल जो छिपला केदार के नाम से प्रसिद्ध हो चुके थे। और उनके राज्य नाजरीकोट में स्थापित हो चुका था तो उस दिन रात्रि में उनको स्वप्न आता हैं। कि उनकी बहन उनको याद कर रही थी दूसरे दिन वह अपने पुत्र काकी रोल और उसका मित भाई काकबास भडड जो एक वीर योद्धा होता हैं। उनको कोकिल माता की खोज में भेज देते हैं। चलते चलते वह लोडिंल डाना खेला साकुड़ी होते हुए गोगी पाठ पहुंच जाते हैं जहां पर उन्हें खाने में जहर की मात्रा दी जाती हैं। जब उनके बस्ता की जांच किया जाता हैं। उसमें 12 वस्त्र 12 श्रृंगार के वस्त्र 12 साल के लिए हर प्रकार के आभूषण भेजे हुए होते हैं। और उसे राज्य का पुष्प ब्रह्म कमल जो नाजरीकोट में उगता हैं। उसे उसके साथ भेजा होता है तो वह देख लेती हैं। कि वह उनके भाई ने भेजा हैं। तो उसके बाद वह उनको सही कर देती हैं। और उनके साथ उनके राज्य में आने को तैयार हो जाती हैं। आते समय वह मिनसीनिया धुर रुपसी बगड जैमघट देवी बगड़ होते हुए नाजरी कोट पहुंचती हैं। उसके बाद एक दिन वह कनार को देखते हैं। उनको वह जगह बहुत पसंद आ जाती है उसके बाद वह अपने भाई से उसे जगह को मांग लेती हैं और वही अपना स्थान बनाकर रहने लगते हैं।

परिणाम

1. क्षेत्र में स्थित लोक संगीत के कई आयाम और भिन्न–भिन्न तरीके के गीतों को गया जाता है जिसमें से यह बहुत क्षेत्र में गया जाना बंद हो गया है। इन अपरूक्षेय गीतों को पुनः शुरू करने के लिए इनका संरक्षण किया गया है।
2. वर्तमान में यह सिर्फ मुनस्यारी विकासखंड में ही गाया जाता है और इन मॉ कोकिला के आशीर्वाद स्वरूप लोकगीतों को सुनने के लिए और अपनी संस्कृति को जानने के लिए विकासखंड के अतरिक्त अन्य क्षेत्र के लोग भी बहुत अधिक संखा में यहॉ आते है।
3. यह दिव्य क्षेत्र मानसखंड के अन्तर्गत आता हैं। और यहॉ से कुटी गॉव (ज्वलिंग कॉग) इसी क्षेत्र एवं लोक संस्कृतिक क्षेत्र का हिस्सा है। यहॉ के लोकगीत, लोकपरम्परा, धार्मिक मान्यता को जानने एवं इसे विश्व पटल तक पहुचाने में भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भी इस क्षेत्र में आये। और क्षेत्रीय संस्कृति की खूब प्रशंसा की और पर्यटन वढ़ावा, रोजगार के अवश्र बढ़ाने की बात कही।

निष्कर्ष

मुनस्यारी सीमांत जिले में बसा हुआ एक विकासखंड है। जिसकी अपनी एक अलग संस्कृतिक पहचान है। समय के साथ–साथ यहां पर भी पश्चात्य सभ्यता का प्रभाव देखने को मिल रहा है जहां लोग प्राचीन समय से ही धार्मिक अनुष्ठान मैं बढ़ चढ़कर भाग लेते थे, किन्तु वर्तमान में इसमें काफी कमी आ गई है समय रहते हुए इनको संरक्षित नहीं किया गया तो आने वाले कुछ वर्षों में यह पूर्ण रूप से विलुप्त हो जाएगा इनको गाने वाले सिर्फ बुजुर्ग लोग ही हमें मिलते हैं नई पीढ़ी में कनार निवासी हाल निवास बरम के मनीष परिहार इसको बचाने का कार्य कर रहे हैं इसको लिपिबद्ध करने का यह एक सार्थक प्रयास है।

यह झोड़ा अलग–अलग गांव में क्षेत्रीय बोली में गाया जाता हैं। जिसमें भिन्नता पाई जाती हैं। क्योंकि वह अपने गॉव में कुलदेवी देवी को स्थापित करने के लिए अपने क्षेत्रीय जगह का वर्णन करते है। कनार गॉव के क्षेत्र का वर्णन करते हैं। और खातोली ग्राम सभा वाले अपने क्षेत्र की लेकिन सभी ग्रामवासी इनका जन्म स्थान और इनका निवास स्थान एक ही बताते हैं।स्थानीय अंचल में प्रचलित इस सांस्कृतिक परंपरा की अपनी एक अलग पहचान हैं। इस प्रकार की लोक संस्कृति को विलुप्त होने से बचाना सरकार एवं समाज दोनों का दायित्व हैं। इसके लिए कारगर प्रयास किए जाने की आवश्यकता हैं। इन्हीं प्रयासों के माध्यम से इस प्रकार की विलक्षण स्थानीय लोक संस्कृति को बचाने के साथ–साथ विश्व पटल पर रखने की आवश्यकता भी हैं। विश्व को सुदूर अंचल में प्रचलित इस प्रकार की संस्कृतियों का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन इनकी मान्यता अंतर आदि विषयों पर गहन अध्ययन की इन क्षेत्रीय संस्कृतियों के सामाजिक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व को प्रकाश में लाने के प्रयास किया जा सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. गोपाल सिंह पुत्र देव सिंह, उम 80, ग्राम खर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 09/04/2023 समय 10 ए. .एम.
2. कुंदन सिंह पुत्र कल्याण सिंह, उम 60 ग्राम खर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 09/04/2023 समय 10 ए. . एम.
3. मोहन सिंह पुत्र तेज सिंह, उम 58 ग्राम खर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 09/04/2023 समय 10 ए. .एम.
4. भीम सिंह पुत्र हयात सिंह, उम 52 ग्राम खर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 09/04/2023 समय 10 ए. .एम.
5. हिम्मत सिंह पुत्र धरम सिंह, उम 68 ग्राम जारा जिबली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 16/04/2023 समय 09 ए. .एम.
6. रूप सिंह पुत्र महेंद्र सिंह, उम 57 ग्राम जारा जिबली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 16/04/2023 समय 09 ए. . एम.

7. दुर्गा सिंह पुत्र चंचल सिंह, उम 72 ग्राम जारा जिबली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 16/04/2023 समय 09 ए. .एम.
8. पदम सिंह पुत्र बहादुर सिंह, उम 64 ग्राम जारा जिबली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 16/04/2023 समय 09 ए. .एम.
9. मनीष परिहार, (पुजारी परिवार) उम 35 ग्राम बरम कनार, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 23/04/2023 समय 10:30 ए. .एम.
10. मोहन सिंह पुत्र उदय सिंह, उम 71 ग्राम सेरा सिर्तोला, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 02/04/2023 समय 11 ए. .एम.
11. केदार सिंह पुत्र हर सिंह, उम 62 ग्राम सेरा सिर्तोला, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 02/04/2023 समय 11 ए. . एम.